International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

रागिनी सरजारे[1] , घनेश्वरी साहू[2]

[1]एम कॉम., एम एड, शिक्षा मनोविज्ञान, सहायक प्राध्यापिका, रायल कॉलेज, राजनांदगांव, छत्तीसगढ
[2]एम ए, एम कॉम, एम एड, सहायक प्राध्यापिका रॉयल कॉलेज, राजनांदगांव, छत्तीसगढ

सार:
प्रस्तुत शोध पत्र में निजी शालाओं अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकार्ता द्वारा समस्या के अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ भिलाई शहर का चयन किया गया है। सामान्य एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नैतिक मूल्य के मापन हेतु **डॉ. अल्पना सेन गुप्ता और डॉ. अरूण कुमार सिंग** द्वारा निर्मित प्रमापीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु कक्षा पाँचवीं में अध्ययनरत सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित वर्ग/अनुसूचित जनजाति के 140 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। परिणामों से ज्ञात होता है कि निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं अनुसूवित जाति/जनजाति विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द : नैतिक मूल्य, सामान्य एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति।

प्रस्तावना
शिक्षा विकास की वह अनवरत् प्रक्रिया है, जिसका न कोई आदि है और न अन्त । आज के युग में यह आवश्यक ही नहीं, वरन् महत्वपूर्ण है, कि हम शिक्षा को ऐसे रूप में देखे जिसमें न केवल शिक्षक अभिभावक और छात्र वरन् सम्पूर्ण समाज सतत् रुचि ले चूँकि शिक्षा एक ऐसी कुंजी है, जो कई दरवाजे को खोलती है, जिसकी श्रेष्ठता पर जीवन को सफल एवं सार्थक बनाना है तो शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय को नजर अन्दाज नहीं कर सकते ।
शिक्षा संस्कार की जननी है। शिक्षा से ही सभ्यता का विकास होता है। इसके कारण ही वो अपने समाज में विद्यमान आदर्शों को ग्रहण करता है और भविष्य में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का समाना करने के लिए तैयार रहता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में शिक्षा का मूल उद्देश्य ही परिवर्तित होता चला गया है। आज समय की गति से मनुष्य आगे बढ़ रहा है और नैतिक मूल्यों को पीछे छोड़ता चला आ रहा है। बालक जो आने वाले भविष्य का कर्णधार है, उसके नैतिक मूल्य में होने वाला पतन वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या है। इस वजह से राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में भी अनेक बाधाएँ आएंगी, साथ ही संपूर्ण राष्ट्रीयता एकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा इसलिए इस अध्ययन की और विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
अतः यही कारण है कि शोधकर्ता ने **"कक्षा पाँचवीं में अध्ययनरत सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचितजनजाति वर्ग के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन** समस्या का चयन किया।"

उद्देश्यः
निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं अनुसूवित जाति/जनजाति विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का अध्ययन करना है ।

परिकल्पना :
H_1 : निजी विद्यालयों में अध्ययनत् सामान्य एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

न्यादर्श :
प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकार्ता द्वारा समस्या के अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ भिलाई शहर का चयन किया गया है। अध्ययन हेतु निजी

विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा पाँचवीं में अध्ययनरत सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित वर्ग/अनुसूचित जनजाति के 140 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

उपकरण :

सामान्य एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के बच्चों के नैतिक मूल्य के मापन हेतु डॉ. अल्पना सेन गुप्ता और डॉ. अरूण कुमार सिंग द्वारा निर्मित प्रमापीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्याः–

H_1 : निजी विद्यालयों में अध्ययनत् सामान्य एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का मापन करने के पश्चात् मध्यमान और प्रामाणिक विचलन ज्ञात कर 'टी' मान सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया जिसका विवरण अग्रलिखित सारणी में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी क्रमांक 01 : *निजी विद्यालयों में अध्ययनत् सामान्य एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा ।*

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	"टी" मूल्य (t)
1	*सामान्य*	70	26.35	4.36	0.75
2	*अनुसूचित जाति/जनजाति*	70	26.92	4.67	
df=138		**P > 0.05**		**सार्थक नहीं है।**	

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 ज्ञात होता है कि निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का मध्यमान कमांक 26.35 व 26.92 है, एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.36 व 4.67 है, इनके मध्य टी मूल्य का मान 0.75 प्राप्त हुआ है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है, निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं अनुसूवित जाति/जनजाति विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः हमारे द्वारा बनाई गयी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष :

निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य एवं अनुसूचति जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। कारण यह है कि नैतिक मूल्य का विकास मनुष्य जीवन की आधार शीला है जो किसी भी धर्म, जाति के संबंध में भिन्न नहीं हो सकता है। वर्तमान समय में प्रत्येक जाति वर्ग के अभिभावक चाहे वह सामान्य वर्ग के हो या चाहे वह अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के हो मूल्यों के विकास में एक सामान भूमिका निभाते है एवं सभी वर्ग के अभिभावक अपने–अपने तरीके से विभिन्न नैतिक मूल्यों के विकास में बल देते है अतः हम कह सकते है कि नैतिक मूल्य के विकास में अनुसूचित जाति/जनजाति या सामान्य वर्ग का कोई प्राभाव नहीं पड़ता है।

सुझाव :

प्रस्तुत लघुशोध में प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर शोधकर्ता के अपने कुछ सुझाव प्रस्तुत किए हैं जिससे बच्चों के नैतिक मूल्य को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

1. पाठ्यक्रम के निर्माण में नैतिक मूल्यों को अग्रिमता देना चाहिए।
2. शिक्षक को अपना व्यवहार नैतिक मूल्य से पूर्ण करना चाहिए जिन्हें देखकर विद्यार्थियों में भी नैतिकता का विकास हो।
3. शिक्षक को बालक में नैतिक मूल्य के प्रति आस्था का विकास करना चाहिए।
4. ऐसे महापुरुषों के जीवन चरित्र को पढ़ाना चाहिए जिन्होंने नैतिक मूल्यों को आत्मसात किए हो ।
5. शिक्षक को न केवल विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर ध्यान देना है वरन् उसके नैतिक मूल्यों पर भी ध्यान देना चाहिए।

संदर्भित ग्रंथ–सूची :

1. **अरवानि पन्ना (2003) :** मोरल एजुकेशन, मोरल जजमेंट एण्ड पर्सनाल्टी एन एक्सप्लोटरी स्टडीज, इण्डियन जनरल ऑफ साईकोमेट्री एण्ड एजुकेशन, 34 (1), 47–51.
2. **कपिल, एच. के. (1984) :** अनुसंधान विधियाँ आगरा, हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस ।
3. **ग्रेग, गिब्स एवं अन्य 1992 से 1995 :** पैटर्न ऑफ डेवलपमेन्टल डिले इन मोरल जजमेंट वाई मेल एंड फिमेल डेलिकन्टर्स, जनरल आर्टिकल (1995–13855–001) यू.एस. व्याने स्टेट युनि. प्रेस साइको इनफो.
4. **गांधी, के. एच. :** ज्ञान पब्लिक हाउस न्यु दिल्ली, वेल्यू एजुकेशन, स्टडी ऑफ पब्लिक ओपिनियन पृष्ठ संख्या 10 से 14.
5. **चंद्रा शिवेन्द्र एवं शर्मा राजेन्द्रः** एचलांटिक पब्लिक रिसर्च इन एजुकेशनल, पृष्ठ संख्या 114 से 117.
6. **नैगी सुरेन्द्र सिंह :** नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिशिंग पृष्ठ संख्या 78 से 83.